एमए (हिन्दी) द्वितीय सेमेस्टर
संस्कृति साहित्य का इतिहास
CC – 7
संस्कृत नाटक का उद्भव

संस्कृत साहित्य के इतिहासकारों के अनुसार–तृतीय शती ई० के भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र की रचना की, जिसमें उन्होनें स्वयं पूर्व के नाट्याचार्यों के अनेक नामों का उल्लेख किया है। शास्त्र का विकास तभी हो पाता है जब मूल कृतियाँ पर्याप्त परिमाण में उपलब्ध हो जाए। स्पष्ट है कि तिसरी शती ई० तक इतनी नाट्य कृतियाँ लेखन और प्रदर्शन तक उपलब्ध हो चुकी थी कि नाट्य कर्म और रंग मंच को लेकर व्यवस्थित शास्त्र की जरूरत महसुस की जाने लगी थी। दुर्योगवश बहुत सारी नाट्य–कृतियाँ विलुप्त हो गयी या नष्ट हो गयी। संस्कृत में व्यापक रूप में नाटक के लिए प्रचलित शब्द है–'रूपक' जिसके 10 भेद और 18 उपभेद बताये गए हैं इनमें एक नाटक है –

संस्कृत नाटक के उद्भव को लेकर देशी–विदेशी विद्वानों के बीच भारी मतांतर दिखाई पड़ता है लेकिन सामान्य रूप में ऋग्वेद के संवाद सूक्तों में उसका स्त्रोत निर्दिष्ट किया जाता रहा है। संस्कृत रूपक का विकास नितांत भारतीय वातावरण में इस भाव–क्रिया के अभिनव हेतु हुआ है जिसमें चरित्र–चित्रण अथवा इतिवृत की अपेक्षा रसोद्बोधन को अधिक

महत्व आरंभ से ही दिया जाता रहा है। परिणामतः संस्कृत रूपक आदर्शवादी एवं रस संवलित रहता है। इसलिए मानव हृदय की गहराई तथा उसके आंतरिक भावों के विश्लेषण में सक्षम रहा है। रस की प्रधानता के कारण रूपक में अभिनय करने वाले पात्र वर्गीय (typical) होते हैं, व्यक्तिपरक (Individual) कम। संस्कृत रूपकों में दुखांत नाटक का अभाव है, क्योंकि भारतीय दर्शन में जीवन का अवसान दुःख में न होकर सुख में देखा गया है।

पाणिनि ने "अष्टध्यायी" में नट सूत्रों की चर्चा की है जो आज प्राप्त नहीं है, किन्तु अनुमान है कि उनमें नाट्यशास्त्र संबंधी तत्वों की चर्चा रही हो। इन नट सूत्रों के रचनाकार शिलालिन कृषाश्व थे। ई०पू० चौथी शती की रचना कौटिल्य के "अर्थशास्त्र" में भी 'कुशीलव' शब्द आया है। बाल्मीकि की 'रामायण' में भी नट, नर्तक, कुशीलव, रंग आदि शब्द नाट्य संदर्भों में ही पाए जाते हैं। 'महाभारत' में भी अनेक ऐसे उल्लेख है–विराट के राजमहल में एक रंगशाला का उल्लेख है। हरिवंश पुराण में तो कृष्ण के वंशजों द्वारा अभिनीत एक पूरे रूपक का उल्लेख मिलता है। पतंजलि के 'महाभाष्य' में भी कंस–वध, बलि–वध नामक दो रूपकों का जिक्र आता है। छोटानागपुर की पहाड़ियों में सीतावेंगा की गुफा में दूसरी–तीसरी शती ई०पू० की एक नाट्यशाला मिली है जो नाट्यशास्त्र के निर्देशों के अनुरूप है।

इस प्रकार ऐसे सैकड़ों प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध हो जाता है कि न केवल नाट्यकृतियों की रचना बल्कि जन साधारण के समक्ष उनके प्रदर्शन भी ई०पू० 500–700 वर्ष पहले से होते रहे हैं।

प्रस्तुतकर्ता
आयुषी रॉय
अतिथि शिक्षक
हिन्दी विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना
E-mail Id :
ausheeroy.roy@gmail.com